कहे महंमद सुनो मोमिनो, ए उमी मेरे यार।
छोड़ दुनी ल्यो अर्स को, जो अपना वतन नूर पार।।७३ ।।

आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो। तुम निश्चित रूप से अनपढ़ मेरे यार हो, इसीलिए दुनियां को छोड़कर घर परमधाम का रास्ता लो अपना घर अक्षर के पार है।

हम बंदे रूहें इन दरगाह, कह्या अर्स दिल मोमिन।
यारों बुलावें महंमद, करो सिजदा हजूर अर्स तन।।७४ ।।

हम सभी रूहें इसी परमधाम की रहने वाली हैं जिनके दिल में पारब्रह्म अर्श करके बैठे हैं। इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी बुलाकर कहते हैं कि इस साक्षात पारब्रह्म श्री राजजी महाराज जो मेरे दिल में विराजमान हैं, को आकर सिजदा करो।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २६४ ॥

खुलासा इसलाम का

असल खुलासा इसलाम का, सब राह करत रोसन।
झूठ से सांच जुदा कर, देसी आखिर सुख सबन।। १ ।।

असल खुलासा इस्लाम (निजानन्द सम्प्रदाय) का सच्चा ज्ञान सब धर्मों की हकीकत बताता है। यह माया और ब्रह्म की अलग-अलग पहचान कराकर अन्त में सबको सुख प्रदान करेगा।

मगज मुसाफ और हदीसें, हादी हिदायत देखें मोमिन।
ए खुलासा बिने इसलाम का, सबों देखावे बका वतन।। २ ।।

हादी श्री प्राणनाथजी की कृपा से कुरान और हदीसों के छिपे रहस्य मोमिन समझेंगे और सबको अखण्ड परमधाम का दर्शन कराएंगे। [यही निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-ए-इस्लाम) का नियम है।]

बका फना का बेवरा, पाया मगज सबका ए।
हादी रूहें अर्स से इजने, लैलत कदर में उतरे।। ३ ।।

अखण्ड परमधाम और मिथ्या माया दोनों का सार यह है कि हादी श्री श्यामाजी और रूहें श्री राजजी महाराज के हुकम से लैल तुल कदर की रात्रि में संसार में आए हैं।

हकें कह्या अलस्तो-बे-रब-कुंम, कालू बेले कह्या रूहन।
खेल देख मुंह फेरोगे, न मानोगे रसूल सुकन।। ४ ।।

खेल में उतरते समय श्री राजजी महाराज ने कहा, हे रूहो! मैं ही तुम्हारा वाहिद (एक) खुदा हूं। तब रूहों ने तुरन्त उत्तर दिया कि बेशक आप ही हमारे धनी हैं। तब श्री राजजी महाराज ने कहा कि जब खेल में जाओगी तो मेरे से विमुख हो जाओगी और रसूल के वचनों को नहीं मानोगी।

भी फुरमाया तुम भूलोगे, साहेद किए रूहें फरिस्ते।
मैं तुममें साहेद तुम दीजियो, आप अपनी उमत के।। ५ ।।

श्री राजजी ने कहा कि तुम मुझे अवश्य भूल जाओगी। इसलिए मैंने रूहों और जबराईल, असराफील को गवाह बनाया है। श्यामाजी! मैं भी तुम्हारी गवाही दूंगा और तुम अपनी रूहों की गवाही देना।

चौथे आसमान लाहूत में, रूहें बैठी बारे हजार।
इन तसबी से पैदा होत हैं, फरिस्तों का सिरदार।। ६ ।।

चौथे आसमान लाहूत में बारह हजार रूहें बैठी हैं। उनके इस सिलसिले से देवताओं के सिरदार महाविष्णु की उत्पत्ति हुई।

Nijanand App

रूहें रहें दरगाह बीच में, प्यारी परवरदिगार।
खासलखास कही इनको, सिफत न आवे माहें सुमार।। ७ ।।

इस पूज्य परमधाम के बीच में पारब्रह्म की प्यारी आत्माएं रहती हैं जिनको कुरान में खासलखास कहा है। इनकी सिफत का वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता।

उमत मेला महंमद का, इनकी काहूं ना पेहेचान।
ना होए खुले बातून बिना, मारफत हक फुरमान।। ८ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की इस जमात की किसी को पहचान नहीं थी। जब तक कुरान के रहस्य न खुलें, पारब्रह्म की पहचान होना मुश्किल है।

ए बात नहीं अटकल की, होए साबित खुलें हकीकत।
बूझे दीन महंमद का, हक हादी रूहें निसबत।। ९ ।।

यह कुरान की बातें अटकल की नहीं हैं। इनके रहस्य जब खुलेंगे तब इसकी हकीकत का पता लगेगा और तभी श्री राजजी, श्री श्यामाजी की निसबत का पता चलेगा। इन्हें सुन्दरसाथ ही समझ सकता है।

इन महंमद के दीन में, सक सुभे जरा नाहें।
सो हकें दिया इलम अपना, ए सिफत होए न इन जुबांए।। १० ।।

इन श्री प्राणनाथजी के निजानन्द सम्प्रदाय (दीन-ए-इस्लाम) में जरा भी संशय की गुंजाइश नहीं है। पारब्रह्म ने इन्हें अपनी जागृत बुद्धि तारतम वाणी दी है, इसलिए इनकी सिफत जबान से वर्णन नहीं हो सकती।

मासूक महंमद तो कह्या, बहस हुआ वास्ते इस्क।
और कलाम अल्ला में कह्या, आसिक नाम है हक।। ११ ।।

श्री श्यामाजी महारानी को श्री राजजी महाराज ने परमधाम में माशूक करके कहा। वह इसलिए कि इन्हीं से इश्क रबद हुआ और इसीलिए कुरान में अल्लाह को आशिक कहा है।

मूल मेला महंमद रूहों का, सो कोई जानत नाहें।
ए जाने हक हादी रूहें, अर्स बका के मांहें।। १२ ।।

जिस परमधाम में श्री श्यामा महारानी और रूहें मिलकर बैठी हैं उसको कोई नहीं जानता। श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानीजी और ब्रह्मसृष्टियां जो अखण्ड घर की हैं, वही इस रहस्य को जानती हैं।

सुंनत जमात याको कहे, और कह्या दीन उमत।
महंमद की गिरो मिने, सक न सुभे इत।। १३ ।।

कुरान में इन रूहों को ही सुनकर ईमान लाने वाले (सुन्नत जमात) और इन्हें ही सुन्दरसाथ (दीन-ए-उम्मत) कहा है। श्री प्राणनाथजी के सुन्दरसाथ में किसी प्रकार का संशय नहीं है।

सक सुभे सब सरीयतों, यों कहे हदीस फुरमान।
कोई जाने ना हक तरफ को, ए अर्स रूहें पेहेचान।। १४ ।।

कुरान और हदीस में कहा है कि कर्मकाण्ड (शरीयत) पर चलने वाले ही संशय में डूबे होंगे और वह हक को नहीं जानते होंगे। पारब्रह्म की पहचान केवल अर्श की रूहों को ही होगी।

Nijanand App

दूजा ढिग वाहेदत के, आए न सके कोए।
आगे ही जल जात है, बका न देखे सोए।। १५ ।।

दूसरा और कोई परमधाम की एकदिली के अन्दर नहीं आ सकता और न अखण्ड को देख ही सकता है। वह शुरू से ही जल जाता है। निराकार से आगे आने की शक्ति नहीं है।

जो देख न सक्या जबराईल, तो क्यों कहूं औरन।
ए हक खिलवत महंमद रूहें, सो जाने बका बातन।। १६ ।।

जबराईल फरिश्ता जिसे नहीं देख सका तो दूसरे कैसे देखेंगे? यह श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी और रूहों का एकान्त स्थान है, इसलिए यही अखण्ड परमधाम के रहस्यों को जानते हैं।

ए खेल हुआ वास्ते महंमद, महंमद आया वास्ते रूहन।
रूहअल्ला इलम ल्याए इनों पर, ए सब हुआ वास्ते मोमिन।। १७ ।।

यह संसार श्री श्यामाजी के वास्ते बना है और श्री श्यामाजी रूहों के वास्ते आए हैं। श्री श्यामाजी तारतम ज्ञान लेकर इन्हीं मोमिनों के वास्ते खेल में आए हैं।

इनों तन असल अर्स में, तीन बेर उतरे मांहें लैल।
ए जाहेर लिख्या फुरमान में, ए हकें देखाया खेल।। १८ ।।

इनके मूल-तन परमधाम में हैं। यह तीन बार रात्रि में खेल देखने आए। श्री राजजी महाराज ने इन्हें खेल दिखाया है, यह स्पष्ट कुरान में लिखा है।

रूहें आइयां खेल देखने, आए महंमद मेंहेदी देखावन।
तीनों हादी खेल देखाए के, दोऊ गिरो ले आवें वतन।। १९ ।।

रूहें खेल देखने के वास्ते संसार में आई हैं और श्री प्राणनाथजी और श्यामाजी खेल दिखाने के वास्ते आए हैं तीनों हादी (बसरी, मलकी और हकी) रूहों को खेल दिखाकर ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि को लेकर अपने घर वापस जाएंगे।

रूहें खेल देखे वास्ते, भिस्त दई सबन।
द्वार खोल मारफत के, करसी जाहेर हक बका दिन।। २० ।।

रूहों ने खेल देखा है। इनके कारण से ही जीवों को अखण्ड किया जाएगा। यह मारफत का ज्ञान बताकर श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम को जाहिर करेंगे।

रूहें उतरी नूर बिलंद से, खलक पैदा जुलमत।
दुनी दिल अबलीस कह्या, दिल मोमिन हक वाहेदत।। २१ ।।

रूहें परमधाम से आई हैं और संसार निराकार से पैदा है। दुनियां के दिलों पर अबलीस (नारद) की बादशाही है और मोमिनों के दिलों में श्री राजजी महाराज विराजमान हैं।

दिल मजाजी दुनी का, मोमिन हकीकी दिल।
हक हादी रूहें निसबत, कही अबलीस दुनी नसल।। २२ ।।

दुनियां के दिल को झूठा कहा है। मोमिनों का दिल सच्चा कहा है। रूहों की निसबत श्री राजजी और श्यामाजी से है। दुनियां की पैदाइश अजाजील से है (विष्णु भगवान की नसल है)।

Nijanand App

तीन जिनस पैदा कही, ताके जुदे कहे ठौर तीन।
करे तीनों को हिदायत महंमद, याको बूझसी महंमद दीन।। २३ ।।

तीन तरह की सृष्टि (पैदाइश) कही है। उनके अलग-अलग तीन ठिकाने भी बताए हैं। मुहम्मद श्री प्राणनाथजी तीनों सृष्टियों को अलग-अलग निर्देश देंगे। इसे सुन्दरसाथ ही समझेंगे।

ए ले खुलासा मोमिन, बका राह इसलाम।
ए मेहेर मुतलक हक से, करत जाहेर अल्ला कलाम।। २४ ।।

इस ऊपर वाले रहस्य को मोमिन समझकर अखण्ड घर के रास्ते पर चलेंगे। यह कृपा बिल्कुल इन मोमिनों पर श्री राजजी महाराज की है, ऐसा कुरान में लिखा है।

बिने सब की बताइए, ज्यों होए सब पेहेचान।
दीजे साहेदी मुसाफ की, ज्यों होए ना सके मुनकर जहान।। २५ ।।

अब सबकी रहनी बताते हैं जिससे सबकी पहचान हो जाएगी। इस बात की गवाही कुरान से देते हैं जिससे दुनियां बेईमान न हो जाए।

जो पैदा जिन ठौर से, तिन सोई देखाइए असल।
हुकम चले जित हक का, तित होए ना चल विचल।। २६ ।।

तीनों में जो जिस ठिकाने से आया है उनको उसी के ही घर की पहचान करा दी। पारब्रह्म का जहां हुकम चलता है, वहां पर कोई भी फेर बदल नहीं चल सकता।

पांच बिने कही मुस्लिम की, जिन लई सरीयत।
कलमा निमाज रोजा कह्या, और जगात हज जारत।। २७ ।।

शरीयत पर चलने वाले मुसलमानों के लिए पांच नियम बने हैं हज, रोजा, नमाज, जकात, कलमा जो मानने पड़ते हैं।

जुबांन से कलमा केहेना, सिर फरज रोजा निमाज।
जगात हिस्सा चालीसमा, कर सके न हज इलाज।। २८ ।।

जबान से कलमा कहना, केवल एक खुदा पर विश्वास रखना, रमजान का रोजा रखना और पांच वक्त की नमाज का फर्ज है। आगे अपनी कमाई का चालीसवां हिस्सा जकात देना और यदि सम्भव हो तो मक्का की यात्रा करना मुसलमानों के लिए आवश्यक है।

परहेज करे बदफैल से, बिने पांचों से पाक होए।
सो आग न जले दोजख की, पावे भिस्त तीसरी सोए।। २९ ।।

ऐसे मुसलमान बुरे कर्मों से परहेज करते हैं और पांचों नियमों को मानकर पवित्र होते हैं। फिर दोजख की अग्नि में नहीं जलते। उनको तीसरी बहिश्त (मुहम्मद की) में कायमी मिलेगी।

कोई पांच बिने की दस करो, पालो अरकान लग आखिर।
पर अर्स बका हक का, दिल होए न मोमिन बिगर।। ३० ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि पांच की जगह अगर दस नियमों का पालन करो और कयामत के दिन तक शरा के नियमों को पालते रहो, तो भी हक की बैठक मोमिनों के दिल के अलावा कहीं और नहीं हो सकती।

Nijanand App

जो पांच बिने न करे, सो नाहीं मुसलमान।
इन की बिने फैल नासूती, ए लिख्या माहें फुरमान।। ३१ ।।

पांच नियमों को न मानने वालों को मुसलमान नहीं कहना चाहिए। इनकी रहनी सब मायावी संसार के लिए होती है, ऐसा कुरान में लिखा है।

एक कुरान का माजजा, दूजी नबी की नबीवत।
एक दीन जब होएसी, कह्या तब होसी साबित।। ३२ ।।

कुरान के रहस्यों का भेद और रसूल साहब की पैगम्बरी तब सत्य होगी जब दुनियां में एक दीन हो जाएगा।

हादी किया चाहे एक दीन, ए कौल तोड़ जुदे जात।
सो क्यों बचे दोजख से, जाए छोड़े ना पुलसरात।। ३३ ।।

श्री प्राणनाथजी सबको एक दीन में लाना चाहते हैं, पर यह जाहिरी मुसलमान मुहम्मद साहब के वचनों के खिलाफ अलग-अलग रास्ते में जा रहे हैं। जिनसे शरीयत नहीं छोड़ी जाती, वह दोजख की अग्नि में जलने से नहीं बचेंगे।

कहे महंमद मिस्कात में, दुनी दिल पर सैतान।
वजूद होसी आदमी, होसी फिरकों ए ईमान।। ३४ ।।

मुहम्मद साहब ने मिस्कात किताब में लिखा है कि दुनियां के दिलों पर शैतान की बादशाही है। इनके शरीर तो आदमी जैसे होंगे, परन्तु इनके ईमान अलग-अलग हो जाएंगे।

पर मैं डरों इमामों से, करसी गुमराह ऐसी उमत।
करसी लड़ाई आप में, छूटे न लग कयामत।। ३५ ।।

रसूल साहब ने कुरान में लिखा है कि मैं आगे होने वाले धर्माचार्यों से डरता हूं जो मेरी जमात को गुमराह कर देंगे और आपस में कयामत तक लड़ते रहेंगे।

तो भए तेहत्तर फिरके महंमद के, तामें एक नाजी कह्या नेक।
और बहत्तर कहे दोजखी, ए बेवरा कह्या विवेक।। ३६ ।।

इस तरह से मेरे दीन में तिहत्तर फिरके हो जाएंगे। उनमें मर्द मोमिनों का एक नाजी फिरका होगा। बाकी बहत्तर दोजखी होंगे। ऐसी हकीकत लिखी है।

करी हकें हिदायत नाजी को, ए लिख्या मांहें फुरमान।
इन बीच फिरके सब आवसी, एक दीन होसी सब जहान।। ३७ ।।

कुरान में लिखा है कि पारब्रह्म की हिदायत नाजी फिरके को होगी। बाकी सभी फिरके इसी में आकर मिलेंगे। तब सारी दुनियां में एक दीन हो जाएगा।

सरीयत खूबी नासूत में, याको ए पांचों पाक करत।
ए जाहेर पांच बिने से, ऊंचे चढ़ न सकत।। ३८ ।।

शरीयत के यह पांच नियम जो ऊपर बतलाए हैं, यह संसार में शरीर की शुद्धि के लिए हैं। इन पांचों की जाहिरी बन्दगी से ऊंचे नहीं चढ़ सकेंगे।

Nijanand App

छोड़ सरा ले तरीकत, पीठ देवे नासूत।
फैल करे तरीकत के, सो पोहोंचे मलकूत।। ३९ ।।

शरीयत को छोड़कर जो तरीकत का रास्ता लेंगे वह मृत्युलोक की चाल छोड़ेंगे। वह तरीकत (उपासना) की बन्दगी से बैकुण्ठ (मलकूत) तक जाएंगे।

कलमा निमाज दोऊ दिल से, और दिलसों रोजे रमजान।
दे जगात हिस्सा उन्तालीसमा, हज करे रसूल मकान।। ४० ।।

तीसरी तरह के लोग वह हैं जो कलमा, नमाज और रोजा तथा जकात (चालीसवें हिस्से) के नियम दिल से करते हैं। वही मुहम्मद के मकान अक्षरधाम जाएंगे।

कह्या दिल दुनी का मजाजी, जो पैदा हुआ केहेते कुंन।
सो छोड़ ना सके मलकूत को, आड़ी जुलमत हवा ला सुंन।। ४१ ।।

दुनियां का दिल झूठा कहा है जो 'कुंन' शब्द कहने से पैदा हुई है, इसलिए यह मलकूत (बैकुण्ठ) को छोड़कर आगे नहीं जा सकते, क्योंकि आगे निराकार का परदा लगा है।

दुनियां दिल कह्या मजाजी, सो टुकड़ा गोस्त का।
अबलीस कह्या दुनी नसलें, सोई दिलों इनों पातसाह।। ४२ ।।

दुनियां के दिल को गोश्त के टुकड़े के समान झूठा कहा है। दुनियां के लोगों को अबलीस (नारद) का वंशज लिखा है। वही अबलीस दुनियां के दिलों में बादशाह बना बैठा है।

आदम औलाद दिल अबलीस, बैठा पातसाह दुस्मन होए।
कह्या हवा खुदाए इन का, उलंघ जाए क्यों सोए।। ४३ ।।

आदम की औलाद जीवसृष्टि के दिलों पर दुश्मन अबलीस बादशाह बनकर बैठा है। इनका खुदा निराकार (हवा) है, जिसे उलंघ कर यह आगे नहीं जा सकते।

जबराईल महंमद हिमायतें, तो भी छोड़ न सक्या असल।
तो दुनियां जो तिलसम की, सो क्यों सके आगे चल।। ४४ ।।

जबराईल मुहम्मद साहब की हिम्मत से भी अक्षरधाम नहीं छोड़ सका, तो यह दुनियां, जो झूठ से पैदा हुई है, वह आगे कैसे चल सकती है?

जेती दुनी भई कुंन से, हवा तिनसे ना छूटत।
सो क्यों छोड़े ठौर अपनी, कही असल जिनों जुलमत।। ४५ ।।

जितनी भी दुनियां जीवसृष्टि 'कुंन' शब्द कहने से पैदा हुई है उनसे निराकार नहीं छूटता। जिनकी उत्पत्ति ही निराकार से कही गई है वह अपने ठिकानों को कैसे छोड़ सकते हैं?

जो उतरे मलायक लैल में, ताको असल नूर मकान।
सो राह हकीकत लिए बिना, उत पोहोंचे नहीं निदान।। ४६ ।।

ईश्वरीसृष्टि खेल देखने के वास्ते रात्रि में उतरी हैं। इन का मूल अक्षरधाम है। यह हकीकत का रास्ता लिए बिना अक्षरधाम नहीं पहुंच सकते।

कलमा निमाज रोजा हकीकी, करे दिलसों रूह पेहेचान।
हुआ बंदा बूझ जगात में, दिल दीदार नूर सुभान।। ४७ ।।

यह कलमा, नमाज, रोजा सच्चे दिल से करते हैं और समझकर अपनी कुर्बानी देते हैं (जकात देना)। तब इन्हें उनके सुभान अक्षर के दर्शन होते है।

Nijanand App

मलकूत हवा जुलमत, उलंघ जाना तिन पर।
बिना हादी हिदायत, सो बका पावे क्यों कर।।४८।।

यह बैकुण्ठ और निराकार को पार कर जाएंगी। बिना श्री प्राणनाथजी की वाणी के यह अपने अखण्ड घर (अक्षरधाम) कैसे जा सकेंगे?

जिनों हक हकीकत देवहीं, सो छोड़े हवा मलकूत।
दिल साफ जिकर रूहानी, ले पोहोंचावे जबरूत।।४९।।

जिनको पारब्रह्म हकीकत का ज्ञान देते हैं, वही बैकुण्ठ और निराकार के पार जाते हैं। इनके दिल पाक होते हैं और सदा धर्म चर्चा में लगे रहते हैं। तभी अक्षरधाम तक जाते हैं।

जो फरिस्ता जबरूत का, सो रेहे ना सके मलकूत।
मलकूत बीच फना के, नूर मकान बका जबरूत।।५०।।

जबराईल फरिश्ता बैकुण्ठ तक नहीं रह सकता, क्योंकि मलकूत (बैकुण्ठ) मिट जाने वाला है। यह फरिश्ता अखण्ड अक्षरधाम का है।

बड़ा फरिस्ता नजीकी, जाको रूहल अमीन नाम।
जुलमत हवा तो उलंघी, जबरूत इन मुकाम।।५१।।

अक्षर ब्रह्म का सबसे नजदीकी फरिश्ता जबराईल है जिसको रूहल अमीन कहा गया। इसका ठिकाना अक्षरधाम होने से यह निराकार को पार कर सका।

पाई बड़ाई पैगंमरों, हाथ जबराईल सबन।
सो जबराईल न पोहोंचिया, मकान महंमद मोमिन।।५२।।

जितने भी पैगम्बर हुए हैं उन सबको महानता जबराईल फरिश्ते से मिली। वही जबराईल फरिश्ता परमधाम में जहां श्यामा महारानी और रूहें (ब्रह्मसृष्टियां) रहती हैं, नहीं पहुंच सका।

सो जबराईल जबरूत से, लाहूत न पोहोंच्या क्यों ए कर।
हिमायत लई महंमद की, तो भी कहे जलें मेरे पर।।५३।।

जबराईल फरिश्ता अक्षरधाम से परमधाम किसी तरह नहीं जा सकता। रसूल साहब ने उसकी हिम्मत भी बढ़ाई, फिर भी वह बोला कि मेरे पर जलते हैं।

तन मोमिन असल अर्स में, जो अर्स अजीम बका हक।
जित पोहोंच्या नहीं जबराईल, तित क्या कहूं औरों खलक।।५४।।

मोमिनों के असल तन परमधाम मूल-मिलावे में हैं जो अखण्ड हैं। जहां जबराईल नहीं पहुंच सका तो दूसरे संसार वाले कैसे पहुंच सकते हैं?

हक हादी रूहें लाहूत में, ए महंमद रूहों वतन।
इस्क हकीकत मारफत, तो हक अर्स दिल मोमिन।।५५।।

श्री राजजी, श्यामाजी और ब्रह्मसृष्टियां परमधाम में रहती हैं। यह श्यामा महारानी और ब्रह्मसृष्टियों का वतन है। इनके पास हकीकत मारफत का ज्ञान और इश्क है, इसलिए श्री राजजी महाराज का अर्श मोमिनों का दिल कहा है।

Nijanand App

मारफत हक हकीकत, अर्स रूहों को दई हक।
जो इलम दिया हकें अपना, तामें जरा न सक।।५६।।

श्री राजजी महाराज ने हकीकत और मारफत का ज्ञान परमधाम की रूहों को दिया है। जो ज्ञान खुद पारब्रह्म ने दिया है उसमें जरा भी संशय नहीं हो सकता।

कही रूहें नूर बिलंद से, मांहें उतरी लैलत कदर।
कौल किया हकें इनों सों, मासूक आया इनों खातिर।।५७।।

परमधाम से रूहें लैल तुल कदर की रात में उतरी हैं, ऐसा कुरान में कहा है। पारब्रह्म ने इन्हीं रूहों से उतरते समय वायदा किया था और श्यामा महारानी भी इन्हीं के वास्ते आई हैं।

ए राह इसलाम मोमिनों, चढ़ उतर देखाई रसूल।
आई तीन सूरतें इन वास्ते, जाने रूहें जावें जिन भूल।।५८।।

रसूल साहब ने मोमिनों के वास्ते ही अर्श का रास्ता चढ़-उतर के दिखाया। मुहम्मद की तीनों सूरतें (बसरी, मलकी और हकी) इन्हीं के वास्ते ही आई हैं ताकि रूहें खेल में भूल न जाएं।

इन वास्ते भेजी रूह अपनी, अर्स कुंजी हाथ दे।
दे खिताब इमाम को, अर्स पट खोले इन वास्ते।।५९।।

श्री राजजी महाराज ने परमधाम की कुंजी तारतम ज्ञान देकर श्यामा महारानी को मोमिनों के वास्ते भेजा और फिर इन्द्रावती के अन्दर बैठकर इमाम मेंहदी का खिताब देकर परमधाम के दरवाजे खोले (पहचान करवाई)।

असराफील जबराईल, भेज दिया आमर।
निगहबानी कीजियो, मेरे खासे बंदो पर।।६०।।

असराफील जागृत बुद्धि का फरिश्ता, जबराईल जोश का फरिश्ता दोनों को श्री राजजी महाराज ने अपना यह हुकम देकर भेजा कि खेल में उतरे मेरे खास बंदों (ब्रह्मसृष्टि) पर निगहबानी करना (अंगरक्षक बनकर रहना)।

इलम लदुन्नी भेजिया, सब करने बका पेहेचान।
आप काजी हुए इन वास्ते, करी खिलवत जाहेर सुभान।।६१।।

अखण्ड घर परमधाम की पहचान कराने के वास्ते तारतम वाणी भेजी और आप श्री राजजी महाराज स्वयं न्यायाधीश बनकर आए और मूल-मिलावे की हकीकत को जाहिर किया।

हक कहे मुख अपने, मैं रूहें राखी कबाए तले।
कोई और न बूझे इनको, मेरी वाहेदत के हैं ए।।६२।।

श्री राजजी महाराज अपने मुख से कहते हैं कि मैंने अपनी रूहों को अपने चरणों तले बिठा रखा है। इन्हें और कोई नहीं देख सकता है, न समझ ही सकता है। यह मेरे तन हैं।

मेरी कदीम दोस्ती इनों से, दोस्ती पीछे इन।
ए इलम लुदन्नी से माएने, करे हादी बीच रूहन।।६३।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि मोमिनों से मेरी अनादि से दोस्ती है। दोस्ती के कारण ही श्यामा महारानी तारतम वाणी से रूहों को जाकर समझाएंगी।

Nijanand App

अर्स दिल इनका कह्या, और कह्या हकीकी दिल।
एती बड़ाई इनको दई, जो वाहेदत इनों असल।। ६४ ।।

इन मोमिनों के दिल को ही हकीकी दिल और श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है। इतनी महानता इनको इसलिए दी गई है कि इनके मूल तन परमधाम में हैं।

ए अर्स बड़ा रूहों का, जो कह्या तजल्ला नूर।
जबराईल इत न आइया, जित महंमद किया मजकूर।। ६५ ।।

यह परमधाम रूहों का बड़ा घर है जिसे नूर तजल्ला कहा है। यहां जबराईल नहीं आ सका। जहां मुहम्मद साहब ने पहुंचकर श्री राजजी महाराज से बातें कीं।

हरफ केतेक कराए जाहेर, केतेक हुकमें रखे छिपाए।
सो वास्ते रूहों दाखले, अब हादी देत मिलाए।। ६६ ।।

श्री राजजी महाराज ने रूबरू की गई बातों के तीस हजार शरीयत के शब्द जाहिर कराए और हकीकत के तीस हजार छिपाकर रखवाये। अब श्री प्राणनाथजी छिपी बातों के रहस्य की गवाहियां देकर समझा रहे हैं।

कही पांच बिने मुस्लिम की, सोई पांच बिने मोमिन।
वे करें बीच फना के, ए पांच बका बातन।। ६७ ।।

जाहिरी मुसलमानों के जो पांच नियम बताए हैं वही पांच नियम ब्रह्मसृष्टि के वास्ते हैं। वह नियमों का पालन दुनियां के वास्ते करते हैं और सुन्दरसाथ परमधाम के वास्ते करते हैं।

अर्स रूहें बंदे हमेसगी, इनों बिने सब इस्क।
हकीकत मारफत मुतलक, इन उरफान मेहेर हक।। ६८ ।।

अर्स में रूहें हमेशा श्री राजजी की सेवा में रहती हैं। इनका नियम बन्दगी सब इश्क से है। हकीकत तथा मारफत का (सच्चा ब्रह्मज्ञान) भी इन्हीं के पास है और मेहर भी इनके ही ऊपर है।

चौदे तबक की जहान में, किन तरफ न पाई अर्स हक।
सो किया अर्स दिल मोमिनों, ए निसबत मेहेर मुतलक।। ६९ ।।

चौदह तबकों की दुनियां में किसी को भी श्री राजजी महाराज और परमधाम की पहचान नहीं हुई। इसीलिए मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श बनाया। यह मेहर बिल्कुल उनकी निसबत के कारण हुई है।

हक नूर रूह महंमद, रूहें महंमद अंग नूर।
ए हमेसा वाहेदत में, तो सब मुख ए मजकूर।। ७० ।।

श्री श्यामाजी हक के नूर से हैं और रूहें (ब्रह्मसृष्टि) श्यामाजी महारानी के नूर से हैं। यह हमेशा एक दिल हैं। संसार के सभी धर्म-ग्रन्थों में इसका जिक्र है।

मोमिन आए इत थें ख्वाब में, अर्स में इनों असल।
हुकम करे जैसा हजूर, तैसा होत मांहें नकल।। ७१ ।।

मोमिनों के असल तन परमधाम में है और वहां से खेल देखने सपने में आए हैं। परमधाम में श्री राजजी महाराज जैसा हुकम करते हैं वैसे ही इस संसार में मोमिनों के नकली तनों से होता है।

Nijanand App

जो मोमिन बिने पांच अर्स में, सो होत बंदगी बातन।
जिन बिध होत हजूर, सो करत अर्स दिल मोमिन।।७२ ।।

मोमिनों के पांच नियम बातूनी हैं। यह परमधाम के वास्ते होते हैं। परमधाम में श्री राजजी महाराज के सामने जैसे आदेश होता है वैसा ही इस संसार में मोमिनों का तन करता है।

दिल अर्स हकीकी तो कह्या, जो हक कदम तले तन।
रसूल उमती उमती तो कहे, जो हक खिलवत बीच रूहन।।७३ ।।

मोमिनों का दिल हकीकी इसलिए कहा है कि इनके मूल तन परमधाम में श्री राजजी महाराज के चरणों के तले बैठे हैं। रसूल साहब भी इन्हें बार-बार खुदा की उम्मत इसलिए कहते हैं कि मोमिन परमधाम में श्री राजजी के चरणों तले मूल-मिलावे में बैठे हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, हकें मेहेर करी तुम पर।
भुलाए तुमें हांसीय को, वास्ते इस्क खातिर।।७४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने तुम्हारे ऊपर कृपा की है और इश्क की लज्जत देने के वास्ते तुम्हें खुद भुला रखा है ताकि तुम पर हांसी कर सकें।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ३३८ ।।

भिस्त सिफायत का बेवरा

मोमिन आए अर्स अजीम से, हमारी हक सों निसबत।
दिया इलम लदुन्नी हकने, आई हक बका न्यामत।। १ ।।

मोमिन परमधाम से आए हैं, इसलिए हम मोमिनों की निसबत (सम्बन्ध) श्री राजजी महाराज से है। श्री राजजी महाराज ने अखण्ड घर परमधाम की न्यामत (जागृत बुद्धि की तारतम वाणी) इनको दी है।

हक इलम एही पेहेचान, कछू छिपा रहेना ताए।
अर्स बका रूहें फरिस्ते, सब हद्दां देवें बताए।। २ ।।

जागृत बुद्धि तारतम वाणी की यही पहचान है कि इससे कोई बात उनसे छिपी नहीं रह सकती। यह वाणी अखण्ड घर (परमधाम), रूहें, ईश्वरी सृष्टि, सबकी करनी और रहनी तथा ठिकानों की पहचान कराती है।

कहूं नेक दुनी का बेवरा, जो हकें दई पेहेचान।
रूह अल्ला महंमद मेहेर थें, कहूं ले माएने फुरमान।। ३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने मुझे जो पहचान दी है उससे मैं थोड़ा दुनियां की हकीकत का बयान करती हूं। मलकी मुहम्मद श्री श्यामाजी महारानी के तारतम ज्ञान की ही कृपा से कुरान के छिपे भेदों को जाहिर कर रही हूं।

ए जो हुई पैदा कुंन से, सबों सिर फरज सरीयत।
पोहोंचे मलकूत हवा लग, जो लेवे राह तरीकत।। ४ ।।

यह सृष्टि जो 'कुंन' शब्द कहने से पैदा हुई है उन पर शरीयत के नियम लागू किए गए हैं। उन जीवों में से जो तरीकत अर्थात् उपासना की भक्ति करते हैं, वह बैकुण्ठ या निराकार तक जाते हैं।

Nijanand App